REG - GHA/06181/2018-2019

काव्यकुल सृजन

(कोरोना काव्य)



संपादक - डॉ राजीव कुमार पाण्डेय

काव्यकुल सृजन

(कोरोना काव्य)

सम्पादक

डॉ राजीव पाण्डेय



प्रकाशक

काव्यकुल संस्थान (पंजी.)

गाज़ियाबाद

पदाधिकारी

संरक्षक

श्री जयप्रकाश वशिष्ठ

अध्यक्ष

डॉ राजीव पाण्डेय

संस्थापक/महासचिव

ब्रह्मप्रकाश वशिष्ठ 'बेबाक'

कोषाध्यक्ष

कामिनी वशिष्ठ

कॉपीराइट



SANKALP PANDEY

सम्पादक की कलम से

आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है। भारत भी इस युद्ध में पूरी शक्ति के साथ विजय श्री पाने के लिए देश के महान सेनापति प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में लड़ रहा है। इस संकट की घड़ी में पूरा देश उनके अनुपालन में घरों में बैठकर उनको शक्ति प्रदान कर रहा है।

हर व्यक्ति अपने स्तर से इस युद्ध में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहा है। आज डॉक्टर,पुलिस, सेना,मीडिया कर्मी देवदूत बनकर हमारी रक्षा में अपने प्राणों को संकट में डालकर हमारे प्राणों की रक्षा कर रहे हैं। इन वीरों की गाथाएं अगली पीढ़ी को कैसे पता चलेगी,आखिर कौन पहुंचायेगा। शब्द सृजक अपने-अपने शब्दों में उनकी गाथाओं को गढ़ रहे हैं अपनी कविताओं में।

उनकी साधना से जो शब्द मुखरित हुए हैं उनको आप तक पहुंचाने का दायित्व काव्यकुल संस्थान (पंजी.) ने लिया है और आज की परिपाटी के अनुसार सोशल मीडिया के युग में अपने इस लघु प्रयास ई ग्रन्थ *काव्यकुल सृजन* (कोरोना काव्य) आपके सम्मुख लाने में समर्थ हुआ है

इस अभिनव प्रयोग में देश के स्थापित रचनाकारों के साथ नवोदित हस्ताक्षरों को भी स्थान मिला है। आशा करते हैं इस पुस्तक को आपका अपार स्नेह मिलेगा।

डॉ राजीव पाण्डेय

कवि,कथाकार,हाइकुकार, समीक्षक

अनुक्रम



सरस्वती वन्दना

मात शारदा के चरणों में ,वंदन बारम्बार।
अल्प बुद्धि से कारक बनकुछ,कर पाऊं उद्धार।
मेरा नमन हजारों बार।
बुद्धि शून्य है रिक्त पटल है।
लिखने को ये मन विव्हल है।
तेरे दर पर ढूँढ़ रहा माँ ,
अब याचक बन इसका हल है।
सुप्त ह्रदय के तारों में कुछ,भरदो अब झनकार।
अवरुद्ध कंठ है शुष्क अधर।
घोर तमस के जंगल में घर।
आशा का मृग रहा खोजता
पर कस्तूरी मिले किधर।
ममता के आँचल से खोलो,कुंडलियों के द्वार।
सकल विश्व ढूँढे सुख भौतिक।
उसमें अदृश्य प्रेम अलौकिक।
नैराश्य भाव के सघन तिमिर में
प्रकट करो मुरलीधर यौगिक।
भोग विलासी मन में भर दो, करुणा का संसार।
स्वार्थ सिद्ध से युक्तआचरण।
उसमें खोया प्रेम व्याकरण।
नयनों की कह रही पुतलियां,
इनका कैसे हटे आवरण।
विकृतियों के घोर तिमिर में,दो रसमय संसार।

डॉ राजीव पाण्डेय



डॉ राजीव पाण्डेय
गाजियाबाद, (उ.प्र.)

आशा के दीप जलायें

घोर तिमिर के इस जंगल में,मंगल गीत सुनायें।
आशा के दीप जलायें।
शक्ति पुंज का उदघाटन है।
अपनी क्षमता का मापन है।
संयम धैर्य पराक्रम देता,
काल दूत को ये ज्ञापन है।
अंतर्निहित शक्तियों को हम, ये विस्वास दिलायें।
आशा के दीप जलायें।
क्रंदन वन में प्रेम जागरण।
सम्बल पाये यथा आचरण।
अकुलाहट को भान कराये,
अनुभावों का मौन व्याकरण।
तीर्थधाम चौखट पर अपनी,नित अम्बर शीश झुकायें।
आशा के दीप जलायें।
प्रस्फुटन हो मौन शक्ति का।
नूतन जाग्रत नेह भक्ति का।
दूर क्षितिज तक खड़े शत्रु में
प्राकट्य हो उर आसक्ति का।
ज्योतिपुंज का देख प्रज्ज्वलन,रजनीकर भी सकुचायें।
आशा के दीप जलायें।
खड़गों से सर्वत्र विभाजन।
विवश भाव का है अनुपालन।
प्रेम अंकुरण ही वसुधा में,
प्रमुदित करते जीवन यापन।
दिव्य ज्योति के आल्हादन से,अन्तस का तमस मिटायें।
आशा के दीप जलायें।



डॉ हरिनाथ मिश्र
अयोध्या, (उ.प्र.)

लॉक डाउन

कोरोना के जाल में,फँसा सकल संसार।
मुक्ति मिलेगी किस तरह,दिखे नहीं आसार।।
खाँसी-सर्दी साथ ले,जब भी चढ़े बुख़ार।
ढँककर मुख को जाइए, किसी चिकित्सक-द्वार।।
सादा भोजन कीजिए, कर प्रक्षालन हाथ।
अभिवादन भी कीजिए, जोड़े कर दो साथ।।
साफ-सफाई ही दवा,कोरोना संपूर्ण।
संभव हो सेवन करें,तुलसी-अदरक-चूर्ण।।
नहीं एकत्रित होइए,भारी संख्या संग।
छुआछूत का रोग यह,नहीं करेगा तंग।।
चला चीन से वायरस,पहुँचा थाईलैंड।
अमरीका में छा गया,बचा नहीं इंग्लैंड।।
अति घातक इस रोग की,त्वरित करें उपचार।
दे निवास-परिवेश को,शुद्ध पवन-संचार।।



डा.मोहन आनंद
भोपाल, मध्यप्रदेश

कोरोना क्या रोना

सारी दुनिया जूझ रही है,संकट के इस दौर से।
मानव कैसे रहे सुरक्षित इस विपदा सिरमौर से।।
इसको हल्के से क्यों लेते,इसी बात का रोना है।
पूरी दुनिया में बीमारी फैली कठिन कोरोना है।
मानव ने अपने स्वारथ को,पंख लगाने अजमाया।
किन्तु उसे ही आज कोरोना ने उल्टा ही डस खाया।
घबराने से काम चलेना,सबको जाग्रत होना है।
पूरी दुनिया में बीमारी फैली कठिन कोरोना है।
ऐतिहात से हो सतर्कजनजन को यह समझाना है,
शासन और प्रशासन के निर्देशों को अपनाना है।
हर मानव अपना भाई,सबका सहयोगी होना है,
पूरी दुनिया में बीमारीफैली कठिन कोरोना है ।
जहाँ भीड़ हो वहाँ भूलकर,कदम नहीं धरने हैं अब।
हाथ मिलाना या शरीर सम्पर्क नहीं करना है अब।।
साफ सफाई हाथ धुलाई का विशेष धरना है ध्यान।
न खुद जाना और न घर पर अब आने देने मेंहमान।।
डाक्टर की सलाह पर अपने,हाथ और तन धोना है।
पूरी दुनिया में बीमारी फैली कठिन कोरोना है।
ये दिन भी न रहें हमेशा बिलकुल भी मत घबराना।
बुद्धि विवेक और चतुराई को जीवन में अजमाना।
सब कुछ ठीक रहेगा बस हमको सतर्क अब होना है।
पूरी दुनिया में बीमारी फैली कठिन कोरोना है।



शंकर लाल जांगिड दादा जी
(राजस्थान)

कोरोना का कहर

शैतान बना आज का इंसान है यहां ,
अब खो चुका ये अपना ईमान है यहां।
शैतान न होता तो ये उन्माद ना होता ,
दुनियां में करोना ही ईज़ाद ना होता।
जिसने तबाह कर दी हैं शहरों की बस्तियां,
लाशों के ढेर दिख रहे यहां जहां तहां।
लाशों से पटे रास्ते सड़ांध कर रहे ,
गिद्ध ,चील,कौवे,नोचनें को फिर रहे।
समृद्ध देश विश्व के शमसान बन गये ,
विश्व की चोटी पे थे जमीं पे आ गये।
इंसान का दिमाग खुराफात से भरा ,
भगवान का खिलौना उससे भी ना डर।
आज हाहाकार सारे विश्व में क्यों है ,
घरों से उठ रहा ये चीत्कार भी क्यों है।
शैतानियत का आखिर अंजाम क्या होगा,
सोचो कब इस महामारी का खात्मा होगा।
लगता है कहर दुनियां को वीरान कर देगा,
दुनियां को कुछ दिन की मेहमान कर देगा।
क्या होगा आशंका से दहशत में हैं सारे,
भगवान भरोसे पे हैं अब वो ही उबारे।



बी पी वशिष्ठ 'बेबाक'
गाजियाबाद, (उ.प्र.)

मैं गाकर आज सुनाता हूँ

ये बात तुम्हारे हित की है मैं गाकर आज सुनाता हूँ।
बार बार हाथों को धोना जितना हो घर से काम।
एक निदान एकांतवास है वायरस का हो काम तमाम।
सैनेटाइजर मुख पे मास्क रख लो तुमको समझाता हूँ।
ये बात तुम्हारे हित की है मैं गाकर आज सुनाता हूँ ।
लाकडाउन को कैद न समझो ये तो बस एक है परहेज़।
कुछ दिन दूरी रखो सभी से चाहे फिर कर लेना हेज।
है अभियान आज कर्फ्यू का हाथ जोड़ मनवाता हूँ ।
ये बात तुम्हारे हित की है मैं गाकर आज सुनाता हूँ ।
कोरोना से जगत दुःखी है इसका ना कोई उपचार।
सिर्फ सावधानी बरतो सब मत लांघो तुम घर के द्वार।
लक्ष्मण रेखा स्वयं खींच लो सविनय मैं खिंचवाता हूँ।
ये बात तुम्हारे हित की है मैं गाकर आज सुनाता हूँ।
माता में इतने उलझे थे अपनों को भी भूल गए।
कोरोना वायरस से कितने मौत के फंदे झूल गए।
प्रकृति ने करवट बदली है अपनों से मिलवाता हूँ।
ये बात तुम्हारे हित की है मैं गाकर आज सुनाता हूँ।



ऋद्धिकरण मिश्र "शैलेश"
डिब्रूगढ़(असम)

कोरोना

कहते हैं जनमा चीनमें,किया वहाँ भीषण संहार।
फिर जा पहुँचा इटली में,किया वहाँ पर बंटाढार।
शनै शनै दुनिया में इसने,फैलाये अपने लम्बे पैर।
योरप और अमेरिका तक,की करली पूरी निज सैर।
जहाँ-जहाँ यह गया वहीं,पर मच गया रोना-धोना
शायद इसी से मिला नाम,इस को वायरस कोरोना।
इसके काटे की काट नहीं,फिरता दुनिया में बेटोक।
यह मस्ती में डूबा रहता,सीमा- सेना सकी न रोक।
मोदीजी ने खुली आँख से,देखा था दुनिया का हाल।
ध्यान लगा पहचान गये,इसके कहरकी टेढ़ी चाल।
शुद्धि स्वच्छता सूत्र बता,जनता को राह दिखाई है।
जिससे इसकी तेज गति,देश में धीमी हो पाई है।
घर में अपने रहो ठाट से, मेल-जोलको जाओ भूल।
औरों से संपर्क है भैया,इसकी तेज गति का मूल।
इसकी एक ही काट मिली,उतरेगा कोरोना का जहर।
मानवता को मिलेगा चैन,जन मन से निकलेगा डर।
बात मेरी मानिए,बाहर न जाइए,
मिलिए किसीसे भी नहीं,ना हाथ मिलाइए।
रहिए सुरक्षित घरमें निज,सबसे दूरी बनाइए।



डॉ ब्रजेन्द्र नारायण द्विवेदी 'शैलेश'
वाराणसी, (उ.प्र.)

एक गीत : कोरोना कर्म योद्धाओं के प्रति

वे हैं योद्धा रिपु के सम्मुख, युद्धभूमि में जाते हैं.
तनिक नहीं वे कम जो देश में विपदा से टकराते हैं...
कोई उन्हें देवता कहता,कोई कहता है उपचारक
अपनी चिन्ता छोड़ जूझते,व्याधि रहे जितनी भी घातक
एक एक का करें निरीक्षण समता पाठ पढ़ाते हैं...1
नहीं देखते कौन बड़ा है कौन है छोटा बस्ती में
नगर ग्राम का भेद न करते जाते सभी गृहस्थी में
धनी हो या कि दलित निर्धन हो सबको ही अपनाते हैं...2
उनके भी हैं बेटे बेटी, घर हैं प्यारी सी घरनी
मात्र स्मरण रहता है उनको सम्मुख में आई करनी
नर सेवा- नारायण सेवा को ही प्रमुख बताते हैं....3
अपनी बलि दे देते हैं पर,नहीं कभी पीछे हटते
नहीं श्रमिक हैलेकिन सेवा धर्म मान प्रति पल खटते
मानवता का मर्म स्वयं का जीवन दे समझाते हैं...4
सुश्रुत,चरक, च्यवन,बौद्धायन ने जो पथ था दिखलाया
उस आदर्श कर्म को युग के देवगणों ने अपनाया
उनके त्याग समर्पण को हम अपना शीश झुकाते हैं..5



मृदुल पाराशर "गैरदिमागी"
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

हारेगा जरूर कोरोना

बाहर जाने की जिद छोड़ दो,
रास्ते जोड़कर घर पर मोड़ दो,
बात दिवस कुछ की है मेरे दोस्त,
रहकर घर कोरोना की कमर तोड़ दो।
महामारी विश्व में अति गंभीर है ,
स्पर्श ही कोरोना की जागीर है ,
मुंह पर मास्क, हाथ धोइए जरूर ,
रहे जो घर इस रण में रणधीर है।
जनता कर्फ्यू से मित्र मुंह मोड़ो ना ,
सेनेटाइज़र और मास्क आदत छोड़ो ना ,
रहकर घर कुछ वक्त गुजारो अपनों से
हारेगा जरूर हिंदुस्तान से कोरोना ।



अरुण गुप्ता
बदायूँ (उ.प्र.)

कोरोना

अब तो लगता है बस कोई यह बोल दे
नहीं रहा कोरोना कोई झूठ ही बोल दे
ऊब गया हूँ एक ही जगह पर रह कर
मुझे जाने दे और सब दरवाजे खोल दे
ना जाने कितने दिन यूँ कैद रहूँगा
क्या गुनाह किया
अब तू मेरा गुनाह बोल दे
मुझे लगता है डर इस कदर
ना जाने कितने दूर होंगे इधर
हर एक दूसरे से पूछता है क्या चल रहा है
जहाँ भी देखो बस एक जबाब मिल रहा है
हर किसी को इन हालातो से डर लग रहा है
मेरे मालिक कुछ तो रहम कर दे
जो हुआ सो हुआ सब भूल जा
हुई गलती अब माफ़ कर दे
देखे मैंने इंसान जो मज़दूर कहे जाते है
कई दिन से भूखे है
वो कई किलोमीटर पैदल चले जाते है
यूँ कब तक कैद रहेंगे
इस कैद से आज़ाद कर दे
हुई हम से भूल अब हमे माफ़ कर दे
जानता हूँ यह भी एक इम्तिहान है
इसमें सभी की परख होगी
दिया कुछ ऐसा फार्मूला है
जो बाहर जायेगा उसकी मौत होगी
पता नहीं अब क्या क्या नया पता चलेगा
अभी लौकडाउन सुना है
अब क्या सुनने को मिलेगा



आशीष पान्डेय जिद्दी
रीवा मध्यप्रदेश

गीत

ऐ कोरोना तेरा शुक्रिया है।
साथ में आज मेरा पिया है।
ऐ कोरोना.........
रोज उठकर सुबह साथ में वो,
हाथ मेरा बटाने लगा है।
मैने झाड़ू अगर है लगाई,
वो भी पोछा लगाने लगा है।
धन्य मोदी नमन आपको है,
काम उत्तम बड़ा ये किया है।।
ऐ कोरोना..........
बैठकर प्रेम की मीठी बातें,
वो करे इक जमाना हुआ था।
घर पे सोना ,नहाना औ खाना,
उनका ऑफिस ठिकाना हुआ था।
पहले पति मेरा था ऐन्ड्राइड,
अब तो की-पैड का नोकिया है।
ऐ कोरोना........
काम घर में है कितना वो देखे,
दर्द तन्हाइयों का वो जाने।
कैसे दिन काटती हूँ अँकेली,
आज खुद पे है बीती तो माने।
हाथ मेरा पकड़ प्यार से वो,
कह रहे तू ही मेरी प्रिया है।
ऐ कोरोना...



मीना जैन
(गाजियाबाद)

चुनौतियां खड़ी हैं

फैल रही रोग की विभीषिका
जाग उठी जीवन की जिजीविषा
प्रार्थना के स्वर उठते अंतर से
सुरक्षित हो हर दिशा-दिशा
विदेशों में रहते प्रवासी प्रियजन
हालात वहाँ भी बिगड़े-बिगड़े
हाल-चाल पूछते जी डरता है
मन में चिंता के बादल उमड़े
छूटी गपशप, छूटा सैर-सपाटा
सड़कों पर पसरा है सन्नाटा
सेवा कर्मी हैं कर्म क्षेत्र में
उनकी सेवाएँ अमूल्य, सबने जाना
प्रकृति का दोहन किया निरंतर
प्रकृति का प्रकोप अब जारी है
रोक थाम के उपाय न सूझें
कोरोना की भयावह महामारी है
पीड़ा पर मरहम रखना
कहना सरल करना कठिन है
आपदा की घड़ी में एकजुट हों
सामने अनेक चुनौतियाँ खड़ी हैं!



रोमित हिमकर
बस्ती (उ.प्र.)

ग़ज़ल

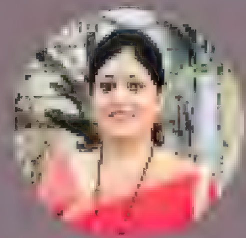
देखो कैसा समय है आया अखिल विश्व बेहाल है!
ऐसा लगता शत्रु देश की सोची समझी चाल है!
हर कोई अवसर की चाहत में फिरता संसार में
कई दिनों की क्षुधा हो जैसे मिटा रहा अब काल है!
माना कि था अहम फैसला पग-पग बन्दिश वाला
इसके चलते मुफलिस मजदूरों का ख़स्ता हाल है!
कुछ विपदा के लम्हों में भी छलने को बैठे हैं
किसी की जेबें भरी हुई और कोई कंगाल है!
सारी दुनिया समझ रही है जां लेवा है जैव आतंक
कोरोना तो विश्व युद्ध से भी ज़्यादा विकराल है!
जहाँ एक तरफ़ा नुक़सां है वहां फ़ायदे भी हैं कुछ
घर का मुखिया दूर कभी रहता था अब खुशहाल है!
जंग जीतने की है कवायद पूरी इस सरकार की
सब जन ऐसा नहीं समझते हिमकर यही मलाल है



गरिमा पाठक
राँची झारखण्ड

कोरोना का रोना

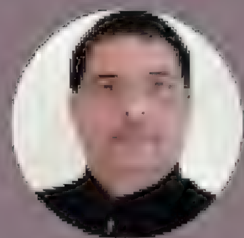
कोरोना से , युद्ध अभी जारी है
साफ सफाई की , बारी है
डरना नहीं है , पुरी तैयारी है
कोरोना से , युद्ध अभी जारी है
संकट से हम , नहीं डरेगे
इस युद्ध मे , डट कर खडे रहेगे
हाथ जोड कर , अभिवादन करेगे
बस कुछ दिन , थोड़ा दूर दूर रहे
कोरोना से , युद्ध अभी जारी है
लाक्कडाऊन का , समर्थन करना है
सहनशील , कुछ दिन रहना है
हम सभी , स्वयं की , सुरक्षा करेगों
हम सजग और , स्वास्थ्य रहेंगे
कोरोना से , युद्ध अभी जारी है



निधि वर्मा
(गाजियाबाद)

हौसलों को थामना

कोरोना को हराने में एक हुआ देश
पैर न पसारे सके ,न करने देंगे इसे प्रवेश
ताली,थाली,घंटी से,योद्धाओं का किया जयघोष
शंखनाद से आभार करता,देश दिखा रहा जोश
चिकित्सक लड़ रहे,निरंतर इस विश्व महामारी से,
सहयोग करो ,सावधानी से रह चारदिवारी में
अभिनंदन उन तमाम, जन सुविधाएं दे रहे कर्मचारियों का
जान हथेली पर रख,संकट से जूझते इन सेनानियों का
संकल्प से पूरा करेंगे, चुनौतियों का सामना।
कोरोना को मात देंगे,रख हौसलों को थामना ।



डॉ.अनिल शर्मा 'अनिल'
धामपुर बिजनौर (उ.प्र.)

बचिएगा कोरोना से

बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।
घर में ही रहना मित्रों,बाहर कहीं न जाना।।
कोरोना,नाम की ये, आयी नयी बीमारी,
ये फैलती तेजी से, भयभीत दुनिया सारी,
इससे बचाव हेतु,बस करिएगा तैयारी,
हाथ धोना अपने,
और इम्युनिटी बढ़ाना।
बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।।
खांसी, बुखार संग संग,यदि सांस की परेशानी,
हो सकता है कोरोना,ये इसकी है निशानी,
उपचार कराने में,करना न आनाकानी,
बनना न स्वयं डॉक्टर,
तुम अस्पताल जाना।
बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।।
एक दूसरे से रहिए,दूरी जरा बनाकर,
उनसे विशेष बचिए,जो आये विदेश जाकर,
न बुलाइए किसी को,न जाओ बुलावा पाकर,
भीड़-भाड़ से अब,
दूरी तुम बनाना।
बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।।
इससे बचे रहोगे,बस रखना सावधानी,
लेना सुपाच्य भोजन,और पीना गर्म पानी,
रखिएगा ध्यान अपना, जिंदगी स्वयं बचानी,
करिएगा बस नमस्ते,
अब हाथ न मिलाना।
बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।।



देवयानी नायक
झाबुआ, मध्य प्रदेश

कोरोना से कैद

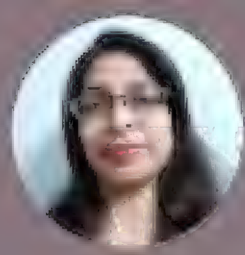
आजादी की साँस के साथ इस कोरोना
की कैद में
महसूस हुआ खोया बहुत था हमने
अपने आपको ..अपनों से... संस्कृति
से....
न जाने क्या-क्या खोते ही खोते जा रहे
थे
चेताया हमें प्रकृति देव ने कोरोना से कैदी
बनवाकर
यादों के झरोखों को खुलवाकर
अनुभव की किताब पढ़वाकर
सिखाएँ रिश्तों के जाने अनजाने मायने
भेद प्रकार समझा कर
जात- पाँत ,रुपया-पैसा, शत्रुबल
छल-कपट,भेदभाव नहीं ये काम आता
साथी होता है हमारा, अपनों का अपने
से प्रेम
जिसकी शक्ति जीता देती
भारी-भरकम समस्याओं की गठरी को
रूई के तंतु की तरह
महसूस कर महका रही यह कोरोना कैद
अब गुलाब की बगिया बन...।



महेन्द्र सिंह
जगदलपुर, छत्तीसगढ़

कहर कोरोना

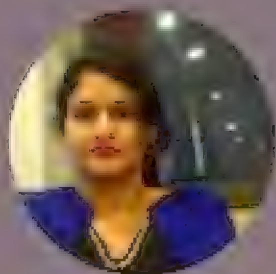
किसने कैद किये परिंदो को,
तो किसे प्रकृति ने आज
कैद बनाया है ।
गिराये किसने अश्क दरख्तो के ,
तो प्रकृती ने आज
किसका शहर बहाया है ।
अब तलक किसने
प्रकृति को छेड़ा है,
तो प्रकृती भी आज
किसे अकेला छोड़ा है।
अति लालच मे
किसने गर्त किये भू पर
तो प्रकृती भी आज
किसको इस गर्त में लाया है।
हर बार खाने मे किसने
जीवों को जलाया है
तो प्रकृती भी आज
किसके जीवन को जलाया है।
मानवता को हमने यैसा जहर पिलाया है
प्रकृति बदला लेने को
"कहर कोरोना" लाया है।



निक्की शर्मा रश्मि
मुम्बई

कोरोना को भगाना है

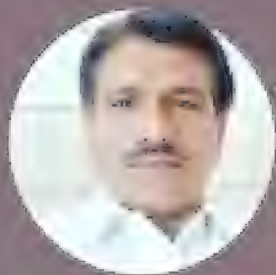
हम सबको आगे आना है
कोरोना को भगाना है
अकेले नहीं बनेगी बात
चाहिए आप सबका साथ
हाथ रखो हमेशा साफ
चेहरे पर हो बाहर जरूर मास्क
जरूरी हो तब बाहर निकलो
खुद भी बचो सबको बचाओ
देश के प्रति फर्ज निभाओ
संस्कार संस्कृति अपनी अपनाओ
नमस्ते करो किसी से हाथ न मिलाओ
जंग में जितना है तो
आगे सबको आना होगा
घर पर ही दिन बिताना होगा,
अकेले नहीं बनेगी बात
चाहिए आप सबका साथ



नीलू गोयल
साहिबाबाद (उ.प्र.)

कुछ तो अच्छा हो रहा है

बहुत समय बाद देश अपना सा लग रहा है,
कोरोना से छिड़ी जंग में कुछ तो अच्छा हो रहा है|
पशु-पक्षी घूम रहे हैं होके बेखौफ और निडर,
जैसे नहीं रहा मरने का उन्हें अब डर|
धूप भी पहले से ज्यादा खिली-खिली,
हवा में भी है मादकता घुली|
सूरज भी है पहले से ज्यादा चमकीला,
चन्द्रमा भी दिखा रहा नित्य नयी कला|
कभी उल्टा कभी सीधा हो लोगों को भर्मित कर रहा है|
कोरोना से छिड़ी जंग में कुछ तो अच्छा हो रहा है|
नहीं रही दौड़ धूप और आपा -धापा वाली जिन्दगी,
अच्छी लग रही है घर में अपनों की मौजूदगी|
सभी एक दूसरे को अच्छे से समझ रहे हैं,
साधन हो भले ही सीमित,पर घर अपनेपन की खुशबु से महक रहा है|
कोरोना से छिड़ी जंग में कुछ तो अच्छा हो रहा है|
साल में मनने वाली दीवाली ,माह में दो बार मन चुकी है,
कहीं सुन्दर कांड का पाठ तो कहीं गायत्री मन्त्र का जप हो रहा है,
सारा देश राम-नाम के उद्घोष से गुंजायमान हो रहा है,
लग रह है ऐसा मानो नये युग का आरंभ हो रहा है|
कोरोना से छिड़ी जंग में कुछ तो अच्छा हो रहा है,
बहुत समय बाद देश अपना सा लग रहा है



"कमलकिशोर ताम्रकार" काश"
गरियाबंद छत्तीसगढ़

कोविद १९ को हराये

संकल्पो का दीप प्रज्वलित कर , वायरस कोरोना को भगाये ।
आओ एकता के दीप जलाये, विषाणु कोविद१९को हराये।।
देश मे आयी, विपदा भारी,मौतो की सिलसिला जारी।
शातिर आतंकी है मानकर,मुक्त करना है दुनिया सारी।।
हिन्दू आये, मुस्लिम आये, आयेसिक्ख,व इसाई आये।
चारो ओर दीप जगमगाये,संकल्प एकता का दोहराये।।
भेद भाव को ,त्याग सभी, मानवता का ,फर्ज निभाये।
राष्ट्र भक्ति के रंग मे रंग, मिशाल एकता की दिखाये।।
दौर कठिन से न घबराये, रखे हौसला, औरो के बढाये।
माना धैर्य की बडी परीक्षा, एक दूजे का ,हाथ बटाये।।
बादल छटेगा, सूर्य निकलेगा,वायरस कोरोना को हराये ।
संकल्पो का दीप प्रज्वलित कर, कोविंद१९को हराये।।



रमेश चंद्र यादव
संत कबीर नगर (उ.प्र.)

महामारी (कोरोना) में भूख और ग़रीबी

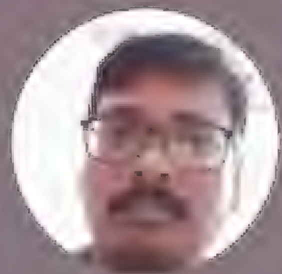
है जिंदगी ठहर गयी, सपने सभी बिखर गये।
भूख धन की सिमट गयी, इतना सभी हैं डर गये।
जिनकी थाली है भरी, वे मौत से डरे हुए।
जिनकी थाली खाली है, वे मौत से अड़े हुए।
कर्मवीर कर्म को समर्पित, हैं मौत से डटे हुए।
जो मौत को भी देखकर,अभी तक डरी नहीं।
आदमी ठहर गया पर,वो अभी ठहरी नहीं।
उसका नाम मौत है।हाँ,उसका नाम मौत है।।
काम बंद हो गया, मालिक खदेड़ा डाँट कर।
चले हैं पेट काटकर, चले है हिम्मत बाँध कर।
चले हैं घर को साधकर,डर है उनका ताकपर।
महामारी उनको मार दे या,भूख उनको तोड़ दे।
मरने के डर से वे अभी से, जीना कैसे छोड़ दे?
आँधियों से जो लड़ाए, खाली पेट भी चलाए।
गालियां भी जो दिलाये, लाठियां भी जो खिलाए।
उसका नाम गरीबी है।
हाँ, उसका नाम गरीबी है।।



डॉ गुलाब चंद पटेल
गांधीनगर गुजरात

कोरोना का कहर

केसा ये खतरे का ब्यूगल हे, दुनिया पूरी मे जहर हे।
केसा ये कोरोना का कहर हे ,हर जगह हवा मे जहर हे
हर चेहरे पे मास्क लगा हे,हर इनसा सेवा मे खड़ा हे
जहा भी देखो हाल यही हे ,आज भयानक रात पड़ी हे,
पंजाब मे कर्फ़्यू लगा हे,सभी शहर मे लोक लगा हे
मौन की छाया हर शहर हे ,कब क्या होगा किसे खबर हे
चीन से कोरोना चला हे,पूरे विश्व मे फ़ेल चुका हे
बध हे व्यापार बंद हे द्वारे ,बैठे हे सब डर की वजह से
क्या होगा इन बेचारों का ? क्या होगा इन लाचारों का ?
कोरोना का कहर चला हे,लगता कोई चाल चला हे
इनका सब कुछ खो सकता हे,इन पे हमला हो सकता हे
कोई रक्षक नजर नहीं आता ,सोया हे आकाश मे दाता,
ये क्या हाल हुआ अपनों का,प्यार का आज निकल रहा हे जनाजा
कवि गुलाब कहे तुम सतर्क रहना ,कोरोना से तुम न डरना



आलोक सिंह " गुमशुदा "
रायबरेली (उ.प्र.)

सकारात्मक सावधानी

कदम से कदम यूँ मिलाते ही रहिये
गर्दिश में भी मुस्कुराते ही रहिये
दौरे मोहब्बत में काटें भी होंगे
पर इश्क़ का फूल खिलाते ही रहिये
ये आबो हवा में जो फैला ज़हर है
सहमा सा सिमटा सा जो ये शहर है
पड़ी है जो बेड़ी सबके चरण में
पहरा नज़र का जो सबकी नज़र है
कठिन है डगर पर चलते ही रहिये
धीरे सही पर बढ़ते ही रहिये
ज़िंदा हैं तो हम बड़े काम के है
ज़िंदगी को ज़िंदगी से जोड़े ही रहिये
लगता है जो पहाड़ों सा बंधन
ज़रूरी है ये, गर न करना हो क्रंदन
सुबह शाम को दीप जलाते ही रहिये
हो सबका भला ये दुआएं ही करिये
कदम से कदम यूँ मिलाते ही रहिये
गर्दिश में भी मुस्कुराते ही रहिये



सुरेन्द्र सिंह राजपूत 'हमसफ़र'
देवास मध्यप्रदेश

कोरोना भगाना है

सुनो भाईयों नारा ये जन-जन तक पहुँचाना है ।
कोरोना हराना हमको कोरोना भगाना है ।
सुनो भाइयों.........
कोरोना हराना......
महामारी है बड़ी ये घातक, दुनियाँ भर में फैली है ।
बढ़ती जाती है संक्रमण से, नागिन बड़ी विषैली है ।
इससे बचने के उपाय सब,जनता को समझाना है ।
कोरोना हराना......
सुनो भाइयों नारा ये
जन-जन तक पहुँचाना है ।
कोरोना ....
घर से बाहर कोई न जाये, न ही किसी से हाथ मिलाये ।
हाथों को साबुन से धोवें, मुँह पर अपने मास्क लगायें ।
निर्देशों का पालन करके ये समाज बचाना है ।
कोरोना हराना......
सुनो भाइयों नारा ये
जन - जन तक पहुँचाना है
कोरोना हराना......
लॉक डाऊन है शहर हमारा, चीज़ ज़रूरी मिल जायेगी ।
जनता के सहयोग से भैया, बुरी घड़ी ये टल जायेगी ।
शासन के आदेश का पालन करना और कराना है ।
कोरोना हराना......
सुनो भाईयों नारा ये
जन - जन तक पहुँचाना है
कोरोना हराना हमको
कोरोना ....



डॉ.अर्चना दुबे 'रीत'
मुम्बई

कोरोना महामारी

वापस घर पर आ गये, करके भ्रमण विदेश।
खतरा कितना बढ़ गया, अपने भारत देश ।।
अपने भारत देश, वायरस को फैलाए।
बहुत किये वे मौज, मौत को लेकर आए।।
'रीत' बढ़त को देख, नहीं खोना है साहस।
कर उपचार प्रबंध, चीन को भेजे वापस ।।1।।
कोरोना ने कर दिया, जीना दूभर आज ।
बंद हुआ सब फैक्टरी, बंद हुए सब काज ।
बंद हुए सब काज, रहो घर मिल सब अपने ।
सोच सही उपचार, बुनेगें सुंदर सपने ।
'रीत' लेत संकल्प, हाथ साबुन से धोना ।
रखों सफाई आप, देश से हटे करोना ।।2।।
छोड़ो मांसाहार को, शाकाहारी खाय ।
मन को अपने शुद्ध कर, नहि कोरोना आय ।
नहि कोरोना आय, सुरक्षा को अपनाओ ।
जग सारा भयभीत, पकाकर खाना खाओ ।
'रीत' करे उपचार, न अपनी सीमा तोड़ो ।
होगा विश्व निरोग, मांस को खाना छोड़ो । ।।3।।
कोरोना के वार से, लड़ना है अब साथ ।
सर्दी, खाँसी से बचे, धोते रहिये हाथ ।
धोते रहिये हाथ, नहीं है अभी दवाई ।
देना है अब मात, कसम मिल हमने खाई ।
'रीत' करे उपचार, नहीं अब रोना धोना ।
कर कर जोड़ प्रणाम, कभी न होय कोरोना। ।।4।।



प्रेम लता मिश्रा (वीर)
आगरा

एक दीप देश के लिए

एक दीप देश को समर्पित किया,
साथ ही एक संकल्प भी लिया ।
कोरोना से अब हम नहीं डरेंगे,
सब मिलकर उससे जंग करेंगे।
दीप संकल्प और एकता के लिए,
दीप भरोसा और विश्वास के लिए।
दीप हर देशवासी की सुरक्षा के लिए,
दीप अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए।
कोरोना से लड़ने की अब पूरी तैयारी,
मिलकर लड़ने से ही होगी जीत हमारी।
जमातियों जैसी भूल अब नहीं करेंगे ,
सोशल डिस्टेंसिंग का पालन सभी करेंगे।
बचना है तो सावधान हो जाएं बंदे,
जमाती तो निकले अक्ल के अंधे।
घर ही है अब सुरक्षा कवच हमारा,
बचने का अब बस यही है एक सहारा।
करते हैं हम सबसे बस एक निवेदन,
अपने घर में रहें सुरक्षित सभी जन।



डॉ0 महालक्ष्मी सक्सेना 'मेधा'
मैनपुरी, (उ.प्र.)

गीत

कोरोना को मात दे सकें, शस्त्र हमारा दूरी है।
देशभक्ति की खातिर साथी,घर रहना मजबूरी है।।
धंधे सबके बंद हो गए, चलते गांव की ओर को।
रैन बसेरा में करते हैं, आशामय एक भोर को।
नहीं हौसलें छोड़ेंगे हम, बंदे भारत मां के हैं।
क्यूँकर आखिर दुश्मन हरदम, ताकत कम ही आँके हैं।
एक भाव रख, नेक भाव रख, नफा सहे मंजूरी है।
कोरोना को मात दे सकें, शस्त्र हमारा दूरी है।।
हुए शराबी पागल से अब, मिलती ना अब वाइन है।
तज स्वदेश, घूमे विदेश जो, अब वह क्वारंटाइन हैं।
सड़क छानते घर से बाहर, पुलिस मारती डंडा जी।
भूख सताती कहीं किसी को , कोई मांगे अंडा जी।
मीत द्वार पर खड़ी हुई,पर ख्वाहिश अभी अधूरी है।
कोराना को मात दे सकें, शस्त्र हमारा दूरी है।।
राजा मदद प्रजा से मांगे, विपदा समझो बहुत बड़ी।
विश्व विजेताओं की देखो, सभी व्यवस्था ध्वस्त पड़ी।
शस्त्र करें ना काम यहाँ पर, एक छलावा दुश्मन है ।
जंग लड़ो मत,छुप कर बैठो, बस में करना निज मन है।
जैसे को तैसा दिखला दें, अब तैयारी पूरी है।
कोरोना को मात दे सकें, शस्त्र हमारा दूरी है।।



सागर सापकोटा
तेजूपुर आसाम

कोरोना

अभी तक जो कोई नहीं पहुचा हो वहाँ पहुचा है कोरोना ।
स्कूल,कालेज बन्द है बच्चों का क्या होगा भविष्य ,
दुनिया में अभी तो को रोना बना है रहस्य ।
हर कहीं सामान मिलना मुश्किल हो गया,
कोरोना सुनामी में सारा ढो गया ।
चलो सोचो,कल सोचो यह आया कहाँ से,
हम हिम्मत करके बचे बचाएं इस कोरोना से ।
अपनों मे दूरी बनाए पर रिश्ता में दूरी नहीं,
जहाँ लापरवाही है हमारी कोरोना है वहीं।
खाना पीना ना हमें सोचना पड़ रहा है,
मिले या न मिले एक चिन्ता हो रहा है ।
दूसरा रूप देने वाला हम भगवान कहते हैं ,
लेकिन आज वो भी मुसीबत में हैं।
तना तनी छोड़ दूँ कोरोना को मोड़ दूँ ।
एकता में आके कोरोना को निचोड़ दूँ।
दुनिया की उन्नति में किस की नजर लग गया,
आर्थिक की मण्डी में कोरोना ग्रहण छा गया ।



डॉ दिग्विजय शर्मा
आगरा उत्तर प्रदेश

कोरोना भगाना है

उठो जागो मेरे प्यारे देश वासियो,
कोरोना को देश से अब भगाना है ।
है एक ऐसा रक्तबीज सा ये दुश्मन उसे तोड़,
जिसके संहार के लिए माँ शक्ति को बुलाना है।
उठो जागो मेरे प्यारे देश वासियो,
कोरोना को देश से अब भगाना है ।
घातक कीटाणु जो शरीर में घुस जाता,
तोप, तलवार, गोली से नही काबू आता।
उठो जागो मेरे प्यारे देश वासियो,
कोरोना को देश से अब भगाना है ।
ये कोरोना एक संक्रामक बीमारी है,
दिन दूना और रात चौगुनी है बढ़ता।
उठो जागो मेरे प्यारे देश वासियो,
कोरोना को देश से अब भगाना है ।
करा न इसका उपचार, तो ये मार डालेगा,
इसको मार भगाओ नहीं इससे डरने का ।
उठो जागो मेरे प्यारे देश वासियो,
कोरोना को देश से अब भगाना है ।
मिलाओ न हाथ किसी से, करो नमस्ते है ,
अपनाओ अपनी सभ्यता,पाश्चात्य न करनी है।
उठो जागो मेरे प्यारे देश वासियो,
कोरोना को देश से अब भगाना है ।
रखो ध्यान स्वच्छता का,हाथ साबुन से धो लो,
रखो फासला एक दूजे से आगे तुम न बढ़ो।
उठो जागो मेरे प्यारे देश वासियो,
कोरोना को देश से अब भगाना है



वेदस्मृति 'कृती'
पुणे महाराष्ट्र

मुक्तक

कहाँ हैं वो देश सभी जो हर पल
महाशक्ति होने का भरते थे दम
मिटा न पाए इक कोरोना को
सम्पूर्ण जगत के न्यूक्लियर बम.
काम न आई बिल्कुल भी
अणु हथियारों की सौग़ात
लो, दिखा दी कोरोना ने
विकसित देशों की औक़ात.
अच्छा होता हम जल प्रपात बनाते
धरती पर हम अन्न उगाते
जिस पैसे से परमाणु शस्त्र बनाये
उस पैसे से वृक्ष लगाते.
पर्यावरण भी नष्ट न होता
जो मानव इतना भ्रष्ट न होता
रासायनों से मुक्त धरा पे
कोरोना का कष्ट न होता .



संदीप वैष्णव 'शुक्ल'
पाली मारवाड़ (राज.)

वाह कोरोना वाह

वाह कोरोना वाह!
चारो ओर तेरा कहर छाया है।
इंसानियत वैसे ही मर रही थी,
अब तुझ पर भी इल्जाम आया है।
पहले ही क्या कम थी दूरी
सभी अपनों के बीच,
जो तूने अपना ऐसा विकराल
खेल रचाया है?
कोई किसी से मिले भी नहीं
लगे दूर से ही बाते करने,
शादी, त्योहार सभी हुए है बेरंग
कैद हुए है सब घर में,
सब से एक ही निवेदन अब तो
कुछ समय कैद में बिताओ
और जल्द ही
कोरोना के जाल से मुक्ति पाओ।



आलोक कपिनाथ "ऋतुराज"
प्रयागराज

मैं चीनी दूत कोरोना हूँ

मैं जिसे संक्रमित करता हूँ,
वह समझ नहीं कुछ पाता है ।
कुछ दिनों बाद सूखी खाँसी,
सर्दी , जुकाम हो जाता है।।
मैं तेज बुखार लिए आता,
दस - बारह दिन के बाद सुनो।
फिर श्वासनली को जकड़ बंद,
करता , आगे की बात सुनो ।।
इस बीच न जाने कितनों को,
तुम बीमारी दे देते हो।
तुम मेल - मिलाप बढ़ा करके,
फैलाव स्वयं कर लेते हो।।
मैं लक्ष्य बनाकर निकला हूँ,
पैगाम लिए बर्बादी का।
संपत्ति सभी हर मुल्कों का,
इस दुनिया की आबादी का।।
सब देखो बेदम , परेशान,
सामर्थ्यवान अमरीका भी।
सब देखो मेरा विश्वयुद्ध,
लड़ने का नया तरीका भी।।
सब सैन्य - शक्ति बेकार हुई,
दुनिया का रोना - धोना हूँ।
तुम नहीं समझते हो मुझको,
मैं चीनी दूत कोरोना हूँ।।
मैं चीनी दूत कोरोना हूँ



राजेश कुमार सिंह "राजेश"
लखनऊ, (उ.प्र.)

अपने घर में कुछ रोज रहो

यह भीषण संकट का पल है,
नादानी बिल्कुल ठीक नही ।
इतिहास की पहली घटना है,
शैतानी बिल्कुल ठीक नही ॥
इस प्रलयंकारी आफत को ,
क्योंइतना हल्का लेते हो ।
हित है सारी मानवता का,
तो क्यों घर में ना रहते हो ॥
आँखों की शर्म मर गई है ,
बन गये इस कदर तुम शातिर।
स्वास्थ्य-सफाई -पुलिस प्रहरी ,
खतरे में खड़े आप खातिर ॥
वे भी एक माँ के बेटे हैं ,
उनकी माँ को भी चिंता है ।
तेरे जीवन रक्षा खातिर ,
उनको खतरों में भेजा है ॥
इस भीषण जलती प्रलय ज्वाल,
की तपन तुम्हें महसूस नही ।
जो काल खड़ा है , मुंह बाये ,
उसकी आहट महसूस नही ॥
अनुरोध कथा वीथिका का ,
अपने घर में कुछ रोज रहो ।
स्वास्थ - पुलिस की सेवा को,
आगे बढ़ कर सहयोग करो ॥



सत्यप्रकाश पाण्डेय
बयाना भरतपुर (राज.)

भय ग्रस्त

भय ग्रस्त होकर जीवन को अपसाद करो ना
भूत पिशाच न कोरोना इससे कोई डरो ना
न आये वो घर तुम्हारे न उसको लेने जाओ
खुद संक्रमण से बचो व अपनों को बचाओ
जीवन है अनमोल धरोहर सब इसे संभालो
कुछ दिन की बात है घर बाहर पैर न डालो
साफ सफाई का ध्यान रख भीड़ भाड़ से दूर
करने खुद का अंत यह होगा कोरोना मजबूर
हम पुण्यभूमि के बाशिंदे हैं ईश्वर है रखवाल
चक्रशुदर्शन की गोद में बांके करें को बाल
नेटबैंकिंग का उपयोग करो न संभालो नोट
धन के साथ चला आये है इसके दिल में खोट।



हरचरन सिंह सूदन
जम्मू (जम्मू कश्मीर)

आज के संदर्भ में

मनुष्य कुदरत से ,
जितना दूर होता जा रहा है ।
दिन-रात वो उतने ही ,
कष्ट पा रहा है ।
क्यों न इसका आत्म-चिंतन,
आज करें हम सभी ।
वक्त , वक्त दे रहा है ,
थोड़ा सा ओर अभी ।



विनोद शर्मा
गाजियाबाद, (उ.प्र.)

कोरोना

छूत रोग है,
कोरोना को भगाएँ,
दूरी बनाएँ,
स्वयं को भी बचाएँ,
सबको ये बताएँ।
फैले छूने से,
एक से दूसरे में,
है कोरोना,
करता बडे रोग,
क्या है करना।
बचना होगा,
यही है उपचार,
अन्यथा मौत,
खडी हुई है पास,
सब बचो बचाओ।
न करो भीड़,
दूर-दूर रहना,
घर में बंद,
जाहिर करो बात,
खतरा है साथ।
जो है रचता,
वही तो है बसता,
सुन कोरोना,
रचेगें इतिहास,
तुझको हराकर।



शिव शंकर बोहरा
नागौर राजस्थान

कोरोना

कोरोना जबर चाल्यो र, जबर चाल्यो र
जका मिनखा न रात दिन भागता देख्या
बान मिनटा म घर बेठ्या देख्या र
कोरोना जबर चाल्यो र, जबर चाल्यो र ।
जका न माँ बाप टाबर टोल्या न टेम नहीं देता देख्या
बान दिन भर घर म सगळा न टेम देता देख्या
घर किया चलाव बान भी ओ ठा पड्यो है अब
लुगाया धन्य हुगी भरतार न घर म टिकता देख्या
घर म अब बढेरा के साग सब बतियावो र
कोरोना जबर चाल्यो र, जबर चाल्यो र ।
सामाजिकता काइ हुव कई बीरा सार समझ ग्या
भाई पणो अर साग जीमणा रो सार समझ ग्या
घर परिवार क साग साग रेण को बायरो चाल्यो र
कोरोना जबर चाल्यो र, कोरोना जबर चाल्यो र



कवि कुमार अमित
गोंडा (उ.प्र)

कोरोना

कोरोना नामक दैत्य ने आज हिंद में प्रवेश किया।
मिलकर के इसका बहिष्कार करना चाहिये॥
किसी को भी कोई हानि इससे न पहुँचे।
मिलकर ऐसा कुछ विचार करना चाहिये॥
मुसीबतों व आफतों में सदा बेबाक रहकर।
डटकर मुकाबला व मार करना चाहिये॥
आहार सदा शाकाहार स्वच्छता वरण करके।
रोगों का खत्म अब भार करना चाहिये॥



डॉ अलका पाण्डेय
मुम्बई महाराष्ट्र

औरत

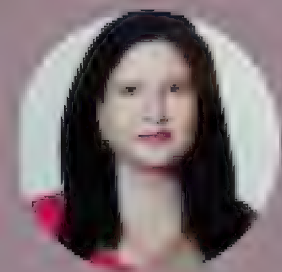
पैदा होते ही लाकडाऊन कर दी जाती है ,
मैंने तो ताउम्र झेला है ,इस दर्द को ।
आज कुछ नया नहीं है कुछ अजूबा नहीं ।
शायद तुम पुरुषों को ,आज समझ आये ।
लॉकडाऊन की त्रासदी,स्वतंत्रता की क़ीमत ।
और तुम औरतों के दर्द को, महसूस कर सको ।
ले कर आओ कुछ बदलाव अपनी सोच में,अपने रेहन में ।
समझने की कोशिश करो हमारी ज़िंदगी को ।
दर्द सहकर,लाकडाऊन में रहकर ,
हर समय परिवार को ,ख़ुशियाँ दी
पल पल मर कर,जीवन दिया।
बाजर बंद , होटल बंद,सारे मॉल बेशक बंद,
मेरे लिये तो सदा यही चार दीवारी ही रही
पापा की लक्ष्मण रेखा फिर भाई की लक्ष्मण रेखा
और फिर पति व ससुराल की लक्ष्मण रेखा ,
चौथे पहर में बेटे ने खींची लक्ष्मण रेखा ..।
आज़ादी को महसूस किया कब खुल कर साँसें ली
जींदगी के हर पड़ाव पर लाकडाऊन ही भोगा
तुमने पहली बार जीवन में देखा लाकडाऊन ,
लाकडाऊन ने आज बराबर कर दी,तेरी मेरी रेखा ।
प्रकृति को भी आया होगा मुझ पर कुछ तो रहम
सदियों की ज़ंजीरों को,पल में तोड़ दिया !
मृत्यु का भय दिखाकर जीवन एक किया ।



डॉ शुभ्रा माहेश्वरी
बदायूँ (उ.प्र.)

उसके बाप को हराना है

दलदल कितना हो भले आगे बढ़ते जाना है।
कोरोना तो क्या उसके बाप को भी हराना है।।
हर तरफ मातम को अब ना छाने देंगे हम
घर में रहकर इस चेन को तोड़ते जाना है।।
साथियों हमे हर कदम संभलकर बढ़ाना है।
हाथों को जोड़ नमस्ते को उठाना है
भारतीय संस्कृति को सहेजते जाना है ।
तुलसी ,गिलोय ,अदरक औ गर्म पानी से
अपने परिवार को सुरक्षित बनाना है।
घर में रहकर उम्मीद की रोशनी जलाना है।
मुश्किलों में भी अपना देश धर्म निभाना है।
लाकडाउन निभा कर अपना फ़र्ज़ निभाना है
हमें जीत हो हासिल , हो सुखी सभी,
हमें अपने राष्ट्र का अब कर्ज चुकाना है।।
दलदल कितना हो भले आगे बढ़ते जाना है।
कोराना तो क्या उसके बाप को भी हराना है।



मनीषी सिन्हा
गाजियाबाद (उ.प्र.)

कोरोना का कहर

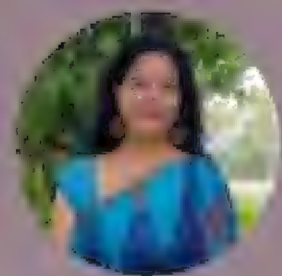
अदृश्य सी है वह कौन सी शक्ति
बन बैठी आज वैश्विक महामारी ।
इसके समक्ष,देश पंक्तिबद्ध घुटने टेके
विकराल त्रासदी को अब ईश्वर ही रोके।
सबक सिखाने की शायद प्रकृति ने ठानी
थम जाओ तुम,करो ना अपनी मनमानी।
व्यक्ति नहीं अब कोई व्यक्ति के संग
शायद शस्त्र हीन यह अघोषित जंग।
विडंबना है या इसे कहें लाचारी
इंसान कैद आज अपनी चारदीवारी।
पल भर में बदलती समय की धार
थम गई देखो कैसे जिंदगी की रफ्तार।
कोरोना का कहर जाने कब तक जारी
असंख्य प्राणों पर यह विषाणु भारी।
निशाना साधा सम्पूर्ण मानवजाति पर
अट्टहास करता सामूहिक विध्वंस पर।
स्वभाविक तौर पर शत्रु अति अवसर वादी
उखाड़ना आवश्यक इसकी जड़ें बुनियादी।
माना आज परिस्थितिजन्य अंधकार घना है
पर संयमसंकल्प के अस्त्र से विजय पाना है।



जयप्रकाश सूर्य वंशी 'किरण'
नागपुर

कोरोना का कहर

कोरोना, कोरोना, कोरोना।
ना कुछ कर सको,
बैठ जाओ घर पर ही,
घर से ही सही,
नमस्कार तो करो ना।
कोरोना----------
टल जाय गी यह भी घडी
इतनी मुश्किल है आन पडी
कुछ नियमो का पालन ,
कुछ सावधानियाँ तो रखो ना ।
कोरोना---------------- -
मत जा ओ कहीं, रहो घर पर ही
परिवार के साथ बैठ जा ओ,
कुछ भजन किरतन परिचर्चा
कुछ जप यज्ञ हवन करो ना ।
कोरोना-----------------
खुद बचो दूसरो को बचाओ,
अपने समाज देश राषट्र को
इस कठीन परिस्थितियों से
इस वायरस से सबको बचाओ ना
कोरोना---------------
पास नही दूर से ही सलाम करो ना।
कोरोना - कोरोना कोरोना।



मैत्री मेहरोत्रा
गाजियाबाद (उ.प्र.)

लॉक डाउन

21 दिन के लॉक डाउन में
घर का काम स्वयं करती
घर को सजाती सवांरती स्त्री
कभी खीजती, कभी झुंझलाती
इस काम के बोझ से,
कभी सहर्ष उठाती सब
जिम्मेदारी, हंसती, मुस्कुराती।
प्रश्न है कि क्या घर का काम
इतना कठिन है? या घर की
धुरी है कामवाली बाई?
इतनी महत्वता है उसकी?
या हम इतने कमजोर और
अशक्त है या है उस पर आश्रित?
कि जीवन यापन कठिन है?
आजकल अच्छा लगने लगा है
अपना किया काम, बर्तन, सफाई,
एहसास हो गया काम की
महत्वता का, उसकी गुणवत्ता का
सजग हो गए हम, नहीं उम्मीद
कामवाली आती होगी, कर देगी।
कर्म का भाव प्रधान है
शायद उन्नति की राह ही
कर्म की प्रधानता है।
स्वयं से जुड़ने का,
स्वयं को महसूस करने का
अद्भुत ,प्रतिपल , प्रतिक्षण,
अविस्मरणीय रहेगा,हमेशा,सदैव।



डॉ० रामप्रकाश 'पथिक'
कासगंज (उ.प्र.)

सजल

कोविड ने हमला बोला है
सुनसान मुहल्ला-टोला है
मैदान खेल से खाली हैं
बच्चों से रिक्त हिंडोला है
माता के मंदिर सूने हैं
अब समाधिस्थ शिव-भोला है
जन-जन में अति घबराहट है
आफत में सबका चोला है
सब बंद घरों में बैठे हैं
घर-द्वार न जाता खोला है
सब गर्म पेय ही पीना जी
अनुकूल न कोकाकोला है
हिल गए विश्व के महारथी
सबका सिंहासन डोला है
कितनी ही साँसें टूट गईं
जीवन-रस में विष खोला है
ऐसे में हिंदी-काव्य रचो
लिख डालो कोई रोला है



डॉ पूर्णिमा शर्मा पाठक
अजमेर राजस्थान

कोरोना वायरस

चली जो कोरोना की बात।
जगत में हो रही मौतों की बरसात।
बन गया जीवन में अभिशाप।
इसे भगाने हेतु रखे,
नियम संयम को साथ।
संस्कृति सदा अपनी,
भरतीय ही अपनाए।
नमस्कार से मान बढ़ाए।
मास मदिरा पास ना लाए।
शाकाहारी भोजन खाए।
मास्क लगाए हर चेहरे पर।
हाथो में स्वच्छता अपनाए।
यात्राओं को टालते जाय।
माने चिकित्सक की हर बात।
पार्टी शॉर्टी, सैर सपाटे,
विवाह सम्मेलन कुछ माह,
तक दूर भगाए।
कर रही यही विनय सरकार
मान लो भाइयो, मान लो बहनो।
पहुँचा दो हर घर ये बात।
चली जो कोरोना की बात
जगत में हो रही मौतों की बरसात।



संजय बहिदार
घरघोड़ा नगर,छत्तीसगढ़

कोरोना सुरक्षा गीत

कोरोना के फंदे में तुम मत फँस जाना जी।
खतरनाक मौसम है अपनी ज़ान बचाना जी।
खा लो रूखा सूखा,चाहे रह लो भूखा,
घर से बाहर पाँव लेकिन नहीं बढ़ाना जी।
घोर संक्रमणकारी,यह तो है महामारी,
खाना पीना मिल जाएगा,ज़ान बचाना जी।
बहुत जरूरी है जाओ,शीघ्र लौटकर आओ,
दोस्त यार भी मिलें अगर तो मत गपियाना जी।
बाहर से जब आना,हाथ पाँव मुँह धोना,
कीटविनाशक साबुन ही उपयोग में लाना जी।
उबला जल ही पीना,संतों जैसे जीना,
जीभ चटोरी की माया में मत पड़ जाना जी।
जीवन है अनमोल,बच्चे गोल मटोल,
ये हैं प्राण हमारे भाई इन्हें बचाना जी।
ज़ान रहे तो दुनिया,सुन लो चुनिया मुनिया,
कुछ ही दिनों की घेराबंदी,क्या घबराना जी?
कोरोना के फंदे में तुम मत फँस जाना जी।



मिथिलेश गुप्ता हर्ष
वैशाली गाजियाबाद

मत अकेला मान तू

शक्ति अपनी जान तू
मत अकेला मान तू
शक्तिशाली शत्रु है
बात यह पहचान तू
विश्व विकल हो रहा
सारा विश्व रो रहा
करनी अपनी भूल कर
अस्तित्व अपना खो रहा
बंद तू किबाड़ कर
घर में अपने राज कर
है निदान बस यही
लक्ष्य यही जानकर
गलत गर उठा कदम
निकल जाएगा ये दम
जरा सी तेरी भूल से
यह बनेगा बेरहम
देश सजग हो रहा
एकता में बंध रहा
रोशनी प्रकाश से
दूर तिमिर हो रहा .



डॉ दीपंकर गुप्त
बदायूँ उत्तर प्रदेश

ऐ करोना तू क्यों कातिलाना हुआ

ऐ करोना तू क्यों कातिलाना हुआ
बंद मासूम का मुस्कुराना हुआ
शक की नजरों से सारे हमें घूरते
जैसे मरकज से अपना भी आना हुआ
अपनी हालत बुरी, देश हालात भी
चीनियों का कहर कायराना हुआ
हैं शहर चुप तो गांव भी खामोश हैं
अपना ही घर हमें कैदखाना हुआ
अब वो मिलने मिलाने के दिन लद गए
दूर जाने क्यों अब दोस्ताना हुआ
कैसे दिल से लगाएं ' दीपंकर ' उन्हें
दिल का रिश्ता भी मुश्किल निभाना हुआ



नवल सिंह चौहान
डबरा मध्यप्रदेश

कॅरोना से जीतेगें हम

कॅरोना के कठिन कहर से,
जूझ रहा संसार।
रहें सुरक्षित करें न घर की,
लक्ष्मण-रेखा पार।।
जीवन है अनमोल बचाने,
सबको घर में रहना है।
सामाजिक दूरी में रहकर,
मार समय की सहना है।।
कदम रोकलो कुछ दिन अपने,
बच जाए परिवार...रहें सुरक्षित...
छोटी सी ये भूल हमारी,
विषम कहर बरपायेगी।
अर्जित की बैभव की दुनियां,
यहीं रखी रह जायेगी।।
परघर नहीं अकारण जाओ,
नहीं बुलाओ द्वार.. रहें सुरक्षित..
जाते हो यदि काम से बाहर,
घर हाथों को धोना है।
करें सफाई नित दिन घरकी,
जीवन को नहीं खोना है।।
इस वाइरस का रोग भयाभय,
कोई नहीं उपचार... रहें सुरक्षित..
जान हथेली पर ले अपनी,
सेवा में दिन-रात लगे।
"नवल"दुआएं मांगों उनको,
हैं अपनों से दूर सगे।।
कॅरोना से जीतेगें हम,
नहीं मानेंगे हार ।
रहें सुरक्षित करें न घर की,
लक्ष्मण-रेखा पर



मनोज मधुर
भरतपुर, राजस्थान

कोरोना

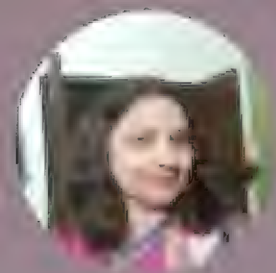
बस इतना है कोरोना,यह गलत आदतों से होना।
ये चुम्बन,हाथ मिलाना छोडो,दो हाथों को जोड़ो ना।
परिवार के साथ रहो घर पर,अपने घर को छोड़ो ना।
देश की खातिर वचन निभाओ,कसम ये बिलकुल तोड़ो ना।
तन की दूरी रखो बनाकर,मन को मन से मोड़ो ना।
यदि काम जरूरी हो कोई तो फिर हाथों को धो लो ना।
यदि कष्ट सह लिये कुछ दिन के,तो नहीं पड़ेगा फिर रोना।
रखो जगाकर चेतन मन,फिर चैन से जीवन भर सोना।
नहीं फूल , काँटे ही उपजें ऐसा बीज नहीं बोना।
लापरवाही में रहकर जीवन से हाथ पड़े धोना।
मत होने दो अनहोनी, फिर जो चाहो वो होना।
इस प्रकृति की ही तुम कृति हो,अपनी संस्कृति मत खोना।
अपनी अपनी खुशी संभालो,प्रमुदित होगा हर कोना।
आँगन की ही खुशियों में,अब परमानन्द को खोजो ना।
विष अणु की संचार श्रृंखला,टूटेगी,तुम तोड़ो ना।
बस इतना ही कर पाये तो,क्या कर लेगा कोरोना।।



कवि अतर सिंह प्रेमी
लोनी गाजियाबाद

हम उनको शीश झुकाते हैं

जो निज प्राणों का मोह त्याग तूफानों से टकराते हैं
हम उनको शीश झुकाते हैं
जो कोरौना के रोगी की सेवा को हर पल खड़े रहे
जो मानवता के प्रहरी बन यम के आगे भी अड़े रहे
जो फसे काल के झगड़ों में हिम्मत से उन्हें बचाते हैं
हम उनको उसी झुकाते हैं
जो अपनी जिम्मेदारी से मुख कभी नहीं मोड़ा करते
डूबती नाव को बीच धार में कभी नहीं छोड़ा करते
संकट की ऐसी घड़ियों में पतवार स्वयं बन जाते हैं
हम उनको शीश झुकाते हैं
यह नर्स डॉक्टर पुलिस सफाई कर्मी महा पुरोधा हैं
यह अंधकार में उम्मीदों की किरण उड़ाते योद्धा हैं
यह मानव नहीं महामानव या देवदूत कहलाते हैं
हम उनको शीश झुकाते हैं
हम बैठे बंद किबाडो में सुख सुविधाओं से खेल रहे
वे भूखे प्यासे रात दिवस खतरों पर खतरे झेल रहे
जो खुद अंगारों पर चलकर खुशियों के फूल खिलाते हैं
हम उनको शीश झुकाते हैं
हम उनको शीश झुकाते हैं



डॉ. उषा कनक पाठक
मिर्जापुर (उ.प्र.)

भावना

मानव अनेक भावनाओं के साथ जीता है
उसी सुई से अपने सम्बन्धों को पिरोता है
यदि हृदय में अच्छी भावनाओं
का होता है जन्म
तो उसके नेत्र स्नेह, प्रेम, करुणा, दया
आदि से हो जाते हैं नम
यदि मानव - मन दोष -पूर्ण
हो जाता है
तो क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष ,
घृणा आदि का भाव आता है
भावनाएं ही देती हैं प्रेम को जन्म
जो है सम्पूर्ण सृष्टि का मर्म
यदि भाव प्रेम का न होता
संसार में होती नीरवता
हे!मानव तुम भी अच्छे बन जाओ
मन में कभी कुत्सित भाव न लाओ
अन्यथा धरित्री हो जायेगी बंजर
कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं सकेगा कर
सब कुछ समाप्त हो जायेगा
केवल तुम्हारा अहंकार रह जायेगा ।



राजेश नवोदयी
आजमगढ़ (उ.प्र.)

दीप प्रज्वलन

दीप प्रज्वलन देश की एकजुटता का ही प्रमाण है
हारेगा कोरोना सामाजिक दूरी कृपाण है...
दीप प्रज्वलन देश की ...
हम मिलकर लड़ेंगे, घर में ही रहेंगे
हम अपने देश का सहयोग करेंगे
छोटा सा दान भी एक बड़ी कड़ी है...
सब मिलकर करना मुश्किल ये घड़ी है ...
पीछे ना रह जाना नव भारत के निर्माण में...
दीप प्रज्वलन देश की...
रखो साफ़ सफ़ाई घर का मेरे भाई
किसी एक की नहीं है विश्व लड़ाई
साबुन से अपने हाथों को धोना।
और आस पास में ना भीड़ सजोना।
सर्वे भवन्तु सुखिन: जब तक शरीर में प्राण है...
दीप प्रज्वलन देश की ...
बस एक क़ामना जन जन की जय हो
सम्पूर्ण विश्व का यह युद्ध विजय हो
हम सबको मिलकर कोशिश है करनी
फिर जैसी करनी वैसी ही भरनी
एकांतवास विपदा का इकलौता एक जुगाड़ है...
दीप प्रज्वलन देश की एकजुटता का ही प्रमाण है
हारेगा कोरोना सामाजिक दूरी कृपाण है..
दीप प्रज्वलन देश की एकजुटता का ही प्रमाण है।।



दिव्य हंस दीपक
सिकन्द्राबाद बुलंदशहर

बहुत जरूरी है

बात पते की आप सभी से कहना बहुत जरूरी है
जीना है तो बंद, घरों में रहना बहुत जरूरी है ।
देख रहे हो सकल विश्व पर संकट कितना भारी है ।
चीन, इटली, ईरान और अब भारत की तैयारी है ।
कोई भी हो देश करोना बीमारी से जूझ रहा ।
पर कोई उपचार किसी वैज्ञानिक को ना सूझ रहा ।
कष्ट इसलिए कुछ दिन हमको सहना बहुत जरूरी है ।
जीना है तो बंद, घरों में रहना बहुत जरूरी है ।
अपनों से भी कुछ दिन हमको थोड़ी दूरी रखनी है ।
इस जीवन में अगर सलामत अपनी हस्ती रखनी है ।
रखें सुरक्षित सभी स्वयं को पूरी जिम्मेदारी से ।
सबको मिलकर लड़ना है इस लाइलाज बीमारी से ।
साथ धार के हमें समय की बहना बहुत जरूरी है
जीना है तो बंद, घरों में रहना बहुत जरूरी है ।
चलो संक्रमण की कड़ियों को नजरबंद हो तोड़ेंगे ।
कोरोना को हम कुछ दिन तक निपट अकेला छोड़ेंगे ।
तब तक नहीं निकलना घर से जब तक वो खुद दूर ना हो ।
मिले बिना ही हमें खुदकुशी करने पर मजबूर ना हो ।
कोरोना का किला दोस्तों ढहना बहुत जरूरी है ।
जीना है तो बंद, घरों में रहना बहुत जरूरी है ।



डा.मधुर बिहारी गोस्वामी
वृंदावन उत्तर प्रदेश

हास्य रचना (छंद-चौपाई)

कोरोना से डरता भाई।
रहता घर में शामत आई।।
नित ही होती रहे लड़ाई।
अब तो यह भी मन को भाई।।
मुझ पर घर के कारज आए।
कमरे भी जाते धुलवाए।।
कहती पत्नी कुछ तो करिए।
सुबह शीघ्र ही पानी भरिए।।
पत्नी जी कहतीं तुम खाली
अब तो साफ करो नित नाली।।
भोजन के अवसर पर आओ।
ठाकुर जी का भोग लगाओ।।
परसो भोजन रख कर थाली।
बढ़िया काम बजेगी ताली।।
फिर धोना है एक भगौना।
मैं तो बस हो गया खिलौना।।
दिन भर ही तुम पढ़ते रहते।
फिर कविता की रचना करते।।
कविता का तुम मोल बताओ।
इसे सुना कर सब्जी लाओ।।
हे प्रभु यह संयोग बनाओ।
कोरोना को दूर भगाओ।।
घर घर में खुशियाँ पहुँचाओ।
मेरा भारत स्वर्ग बनाओ।।



एस के रस्तोगी 'शिव'
पीलीभीत (उ.प्र.)

दीप

छिप नहीं सकती उदासी, बात कुछ ऐसी खास है.
भाग जा भाग जा कोरोना, दीप से ऐसी आस है... !!
मैं नहीं कहता कोरोना , कोई अच्छी बात है....
बात तो कुछ भी नहीं, पर डरना कोई अच्छी बात है...?
अब न दिखेगी बेचैनी, दीप की यह आग है....
दीप की ज्वाला जगे, बहुत अच्छी बात है... !!
याद रखना है नहीं, कोरोना के राग को...
ज्वाला हृदय में धधकी, शान्त करना है विशैले नाग को...
दिख नहीं सकती कभी अब ,कुछ ऐसी बात है...
पन्हुचाए आघात, उस वायरस के सर्वनाश की बात है...
छिप नहीं सकती उदासी, बात कुछ ऐसी खास है...
भाग जा भाग जा कोरोना, दीप से ऐसी आस है.....



डॉ• रघुनाथ मिश्र 'सहज'
कोटा (राजस्थान)

कोरोना पर सहज के चार मुक्तक

हारेगा कोरोना हमने ठान लिया है।
भारत की मुश्तैदी, जग ने मान लिया है'।
यह है गजब लड़ाई जो घर में ही रह कर,
लड़ सकते हैं 'सहज', सबक यह जान लिया है।

....

अनजानी यह है बीमारी कहते जिसको कोरोना।
सजग रहो सोशल डिस्टेंसिंग अपनाओ औ डरोना।
मानो सरकारी हिदायतें तब काबू में यह आए,
'सहज' बेवजह मनमानी से अकाल मौत यूँ मरोना।

....

कोरोना से जंग, अनोखी लड़नी होगी।
समझ-बूझ कर, असली राह पकड़नी होगी।
हथियारों का , काम नहीं इसमें है भाई,
'सहज' घरों में, रह ही टाँग जकड़नी होगी।

....

कोरोना अग्यात ज़हर है।
परेशान हर गांव – नगर है।
'सहज' किंतु कुछ भी न असंभव,
हारेगा पर कठिन समर है।

संपादक परिचय



नाम- डॉ राजीव कुमार पाण्डेय

पिता- स्व.श्री बृह्मानन्द पाण्डेय

माता- श्रीमती उमादेवी पाण्डेय

जन्मतिथि- 5 अक्टूबर 1970

शिक्षा- एम.ए (हिन्दी,अंग्रेजी), बी.एड़,पी-एच.डी.

प्रकाशित कृति- 1- आखिरी मुस्कान(उपन्यास),2-मन की पाँखें (हाइकु संग्रह), 3-बाँहो में आकाश (उपन्यास)

सम्पादित कृति-1-शब्दाजंलि (अखिल भारतीय काव्य संकलन) 2-काव्यांजलि (गंगा विषयक- अ0भा0 काव्य संकलन),3 सृजक (पिता विषयक-अंतरराष्ट्रीय काव्य संकलन), काव्यकुल सृजन (कोरोना काव्य)ई बुक,

लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्डस में दर्ज पत्रकारिता कोश में नाम 2019,हाइकु विश्वकोश,भारतीय साहित्यकार ,सदी के प्रथम दशक का हाइकु काव्य जैसे विश्वकोश एवं सन्दर्भ ग्रन्थों स्थान प्राप्त, यू के प्रकाशित सुन्दर कांड में सहयोग। अनेकों साझा संकलनों में कविताएं, हाइकु,समीक्षा, आलेख आदि प्रकाशित

देश विदेश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं,जाल पत्रिकाओं में नियमित रचनाएँ प्रकाशित

आकाशवाणी व चैनलों से रचनाएँ प्रसारित।

सम्मान व उपाधियां- नेपाल भारत साहित्य रत्न,साहित्य सेतु, डॉ भीमराव आंबेडकर नेशनल फेलोशिप अवार्ड,मैथिली शरण गुप्त सम्मान, दुष्यंत कुमार स्मृति सम्मान सहित अनेकों राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मान

राष्ट्रीयअध्यक्ष-काव्यकुलसंस्थान(पंजी.)

राष्ट्रीय महामंत्री- अखिल भारतीय सहित्य सदन दिल्ली

विभाग संयोजक-संस्कार भारती गाजियाबाद

जिला कोषाध्यक्ष-उ0प्र0 प्रधानाचार्य परिषद गाजियाबाद सहित कई सामाजिक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध

सम्प्रति- प्रधानाचार्य,किसान आदर्श हायर सेकेंडरी स्कूल शाहपुर बम्हैटा, गाजियाबाद

9990650570

@ kavidrrajeevpandey@gmail.com